वेदान्त मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २३ अक्टूबर - २०२३ प्रकाशन - १०

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

अक्टूबर 2023

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	श्लोक	05
2.	पू. गुरुजी का संदेश	06
3.	वेदान्त लेख	10
4.	वाक्यवृत्ति	16
5.	गीता और मानवजीवन	22
6.	जीवन्मुक्त	28
7.	मनु और दशरथ चरित्र	30
8.	कथा	34
9.	मिशन-आश्रम समाचार	40
10.	आगामी कार्यक्रम	63
11.	इण्टरनेट समाचार	65
12	लिन्क	66

अक्टूबर 2023

आत्मनः सच्चिदंशश्च बुद्धेर्वृत्तिरिति द्वयम्।
संयोज्य चाविवेकेन जानामीति प्रवर्तते॥

(श्लोक - २६)

आत्मा का सत्-चित् अंश और बुद्धि-वृत्ति इन दोनों के अविवेकपूर्ण संयोग से 'मैं जानता हूं' इस वृत्ति की उत्पत्ति होती है।

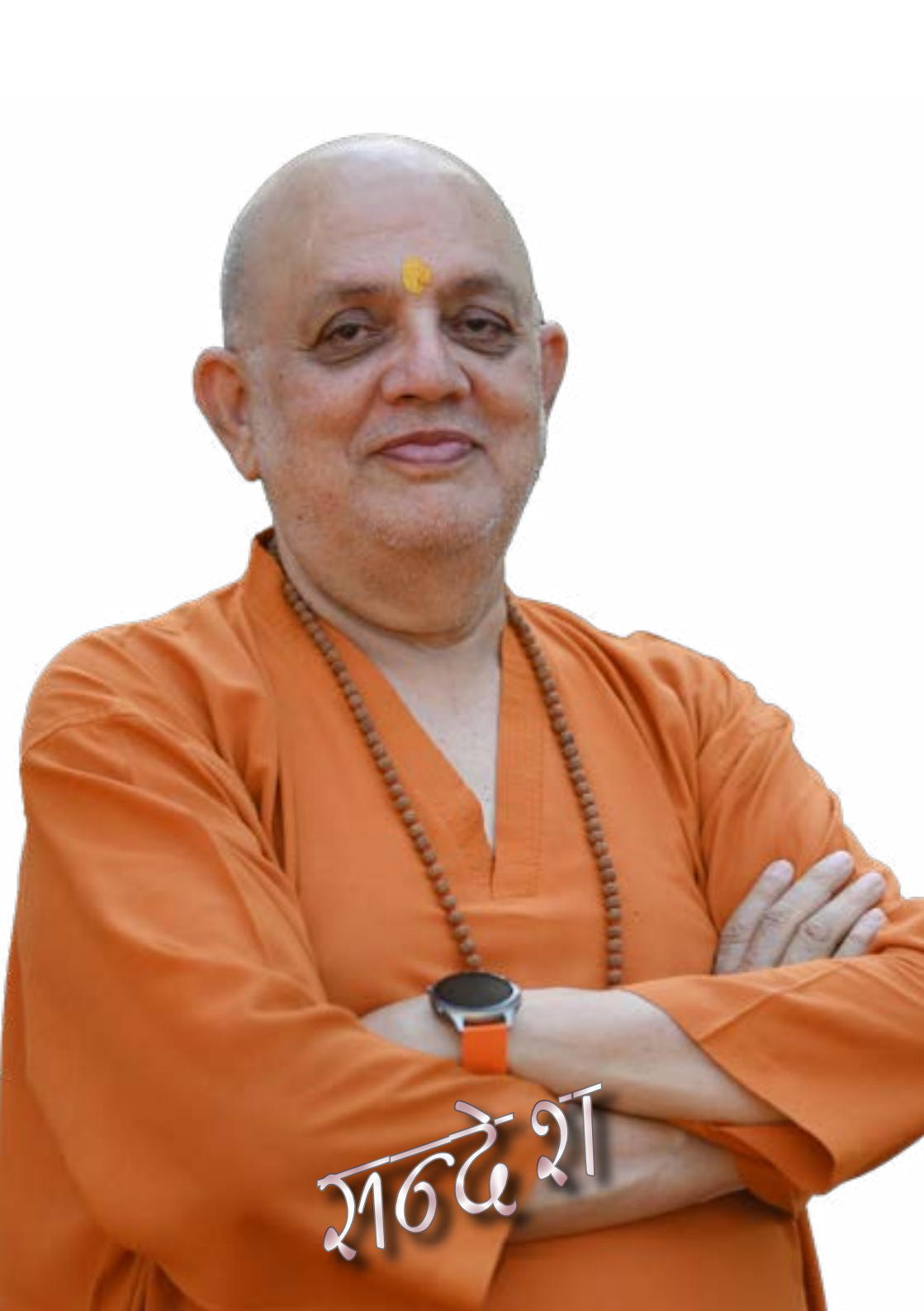
सन्देश

स्थितप्रज्ञ

गीता के दूसरे अध्याय के अन्त में अर्जुन उनके बारे में जानना चाहता है, जो जगे हुए हैं। अर्थात् जिन्होंने जीवन के परं लक्ष्य को सिद्ध कर लिया है। उसके लिए शब्दप्रयोग किया 'स्थितप्रज्ञ' अर्थात् जो स्वस्वरूप – अपनी ब्रह्मस्वरूपता के ज्ञान में निष्ठ है। उनके क्या लक्षण होते है? दूसरे शब्दों में अपने लक्ष्य के स्वरूप को जानना चाहता है। उसके उत्तरस्वरूप भगवान स्थितप्रज्ञ के लक्षण बताते हैं। इस पूरे प्रसंग में उनकी अन्तःस्थिति का स्वरूप, उनका अपने आपके साथ में, विविध द्वन्द्व के मध्य में तथा विषय प्राप्ति के मध्य में क्रिया एवं प्रतिक्रिया के बारे में बताते हैं। न केवल इतना ही, किन्तु कैसे व्यक्ति पतन की और जाता है, उन व्यवधानों के बारे में जो विवेक को दृढ़ नहीं होने देते है – उन सब को बताने के द्वारा एक अध्यात्म साधक को उसके प्रति मानों सावधान करते हैं और उसे निपटने का तरीका भी बताते हैं।

प्रजहाति यदा कामान्.... सर्वप्रथम उनकी अन्तःस्थिति बताते हैं

कि उनके मन से समस्त कामनाएं समाप्त हो चूकी है। कामना की उत्पत्ति का हेतु अपने तथा जगत विषयक निराधार एवं मोहजनित धारणाएं होती है। सब से पहले अपने बारे में धारणा है कि हम एक क्षूद्र जीव है। अपूर्णता व छोटापन हममें सत्य और स्वाभाविक है। अपने बारे में जीव होने की कल्पना ही खण्ड की दुनिया में लाकर खड़ा कर देता है। जहां हमसे पृथक् दृश्य जगत भी समान रूप से सत्य है। अतः अपनी अपूर्णता को दूर करने के लिए एक मात्र विकल्प बाहर के विषय की प्राप्ति व भोग है। अपनी अज्ञानजनित अपूर्णता की धारणा ही कामना का हेतु बनती है। परिणामस्वरूप कामी का जन्म होता है, जो सतत बहिर्मुख होकर विविध दृश्य जगत के विषय की कामना करता है। कामना की पूर्ति के द्वारा वह सन्तुष्टि की अवस्था को भी सिद्ध कर लेता है, किन्तु यह सन्तुष्टि नैमित्तिक अर्थात् बाह्य किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति पर आश्रित होती है। उस अस्थायी, नश्वर निमित्त के हटने से पुनः असन्तुष्ट होता है। इन अज्ञानवश की गई निराधार कल्पनाओं की वजह से पूर्णता व सन्तुष्टि सदैव क्षितिज से परे बनी रहती है।

तद्विपरीत स्थितप्रज्ञ वो है कि जिसमें समस्त कामनाएं समाप्त हो चूकी है। कामना की समाप्ति का हेतु कामी की समाप्ति है। जो कि अपनी अज्ञानवश की हुई अपूर्ण होने की धारणा की समाप्ति होने से होती है। वेदान्त प्रमाण

से गुरु के श्रीचरणों में बैठकर जगत को मिथ्या, अशाश्वत तथा अपनी सत्यता को जान लिया है कि हम पूर्ण ब्रह्मस्वरूप तत्त्व है, जो जगत का अधिष्ठान है। हममें किसी भी प्रकार का खण्ड, अपूर्णता आदि नहीं है। अपनी पूर्णता का ज्ञान ही सन्तुष्टि का हेतु है। जो किसी अस्थायी निमित्त से नहीं किन्तु निर्निमित्त है। इस ज्ञान की वजह से जो उनकी अन्तःस्थिति है, उसे भगवान ने दर्शाया कि, 'आत्मनि एव आत्मना तुष्टः'। वह अपने आपमें, अपने आपसे सन्तुष्ट है। उनकी सन्तुष्टि का हेतु कहीं बाहर वा कोई अन्य, किसी अन्य देश, काल, वस्तु से नहीं है। एवं उनकी अन्तःस्थिति ब्रह्मस्वरूपता के ज्ञान की द्योतक है।

इसका अभिप्राय यह नहीं कि वह निष्क्रिय होता है। यद्यपि वह कर्ता-भोक्ता जीव होने की धारणा से मुक्त है। अतः अपनी संकुचिता की धारणा के अभाव में उनका जीवन स्वार्थ के लिए नहीं, किन्तु वह अन्य के प्रति संवेदनशील रहते हुए परिस्थिति के औचित्य कर्म करता है। वह 'सर्व भूतहिते रत', ईश्वरीय सृष्टि में ईश्वर का निमित्त बनकर जीता है। अतः उनका संकल्प व कामना ईश्वरीय संकल्प होता है। जिसका प्रयोजन जगत में ध र्मव्यवस्था ही होता है। जिस प्रकार भगवान स्वयं अर्जुन को उपदेश देते हैं, कहीं राजनीति करते हैं, कहीं असुरों का विनाश करते हैं। वे स्वयं पूर्ण होते हुए भी यह कामना से युक्त है कि कैसे जगत में धर्म की व्यवस्था हो और सब सुख-शान्ति पूर्ण तरीके से जीते हुए अपना भी तथा सब का कल्याण करें।

वेदान्त लेख
अहम् ब्रह्मास्मि

निश्चय की दुनिया

अज्ञान का अस्तित्व और एहसास अत्यन्त बेचैनी व घुटन की अनुभूति कराता है। अतः अज्ञान की घुटन व पीड़ा को दूर करने के लिए शीघ्र ही किसी न किसी निश्चय पर पहुंचना चाहते हैं। मन की उथल-पुथल व विक्षेप किसी निश्चय पर पहुंचने से खत्म हो जाते हैं। वह संतुष्टि व प्रफुल्लता प्रदान करती है, अतः निश्चय कल्याणकारी होता है। निश्चयों के स्वरूप और उसके प्रभाव स्पष्टता से देखना चाहिए। क्योंकि निश्चय अर्थात् बुद्धि ही हमारे मन की आत्मा है। निश्चय ही हमारे जीवन की दिशा तय करते हैं। किसी चीज के बारे में सुख वा दुःख की प्राप्ति के निश्चय के उपरान्त उसे आधार बनाकर ही प्रवृत्ति वा निवृत्ति होती है। एवं समस्त कर्म का आधार निश्चय ही होते हैं। यह निश्चय संस्कार, चिन्तन मनन, ज्ञान से प्रभावित होते हैं।

निश्चय की दुनिया

किसी निश्चय पर पहुंचने अर्थात् अज्ञान की निवृत्ति के लिए दो तरीके सम्भव होते हैं। प्रामाणिक तरीके का आश्रय लेकर निश्चय करें अथवा अप्रामाणिक निश्चय करें। प्रामाणिक तरीके का आश्रय लेकर निश्चय करना ही ज्ञान है। अप्रामाणिक ज्ञान में भी कुछ न कुछ अवधारणा होती है। उन निराधार अप्रामाणिक निश्चयों को ही कल्पना कहा जाता है। कल्पना अज्ञानियों द्वारा लिया गया ज्ञान का विनाशकारी विकल्प है। कल्पना का आश्रय लेने पर लगता है कि हमने जान लिया और समस्त ज्ञान के फल की भी प्रतीति होती दिखती है। कल्पनाशक्ति पर आश्रित होना भयावह होता है। संसारी व्यक्ति की समस्त समझ प्रामाणिक न होते हुए केवल कल्पना मात्र होती है। यह समस्त अध्यारोप मात्र ही है, जो उसकी दृष्टि से ज्ञान है वो ज्ञानियों के लिए उपेक्षणीय होता है। कल्पना, ज्ञान की शून्यता को अवश्य भरती है, अज्ञान की बेचैनी व घुटन को भी दूर करती है। हम तत्क्षण कुछ न कुछ निश्चय से युक्त हो जाते हैं और जिज्ञासा का शमन हो जाता है। निश्चय करने में

कल्पना शीघ्र आशीर्वाद देती है। किन्तु परिणाम यह होता है कि हम अपना जीवन कल्पनाओं पर आश्रित कर देते हैं। जीव, जगत और ईश्वर तथा सुखादि के बारे में कल्पना करके उसके अधीन होकर जीना ही संसार है। भ्रामक निश्चय की वजह से इतनी बडी किमत चुका रहे हैं कि जन्म-जन्मान्तर से इस संसार की यात्रा में, अन्तहीन खोज में लगे हैं। जीवन में निश्चय का अत्यन्त महत्व होता है।

जीवन का पूरा महल अपने निश्चयों पर ही आश्रित है। हमारे राग और द्वेष के अनुरूप प्रवृत्ति हो रही है, विविध प्रकार की इच्छाएं, ग्रहण और त्याग की चेष्टा तथा प्रवृत्ति व निवृत्ति का आधार केवल भ्रामक निश्चय ही बने हुए हैं। जो धर्माचरण करता है, उस व्यक्ति ने उचित-अनुचित का प्रामाणिक व शास्त्रोक्त तरीके से ज्ञान तो प्राप्त किया है, किन्तु निश्चय करनेवाले जीव के बारे में प्रामाणिक ज्ञान का अभाव है, अतः भ्रामक निश्चय कर लिया है। जब इस निश्चयकर्ता को ही अपने बारे में प्रामाणिक ज्ञान नहीं है, तो उसके द्वारा प्राप्त समझ

एवं तज्जनित प्रवृत्तियां वे सब निराधार व भ्रामक ही होगे। हमारे निश्चय अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं, अतः कल्पनात्मक निश्चय और प्रामाणिक निश्चयों का भेद देखना चाहिए।

सदैव प्रामाणिक निश्चय करने का मूल्य हो जाए और उसका ही अभ्यास डालना चाहिए। इसके लिए अज्ञान की घुटन के प्रति तितिक्षा से युक्त होकर संकल्पपूर्वक प्रामाणिक ज्ञान के लिए उपलब्ध होना चाहिए। वह ही कल्याणकारी तरीका है। यह संकल्प हो कि हम किसी भी हालत में कल्पना नहीं करेंगे। न अपने बारे में और न ही जगत के बारे में। जो अपने बारे में प्रामाणिक ज्ञान की प्राप्ति से ही समस्त कल्पनाओं से परे सत्य को जाना जाता है, वो ही इस अन्धकारमय संसार से परे दिव्य अवस्था में जगता है।

If nothing goes right..
Try going left!

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – 03

तापत्रयार्क सन्तप्तः
कश्चिदुद्विग्न मानसः।
शमादिसाधनैर्युक्तः
सद्गुरुं परिपृच्छति।।

त्रिताप के सूर्य से सन्तप्त, उद्विग्न मन से युक्त कोई शमादि साधनों से युक्त साधक सद्गुरु के पास जाकर प्रश्न पूछता हैं।

वाक्यवृत्ति

आचार्य अब ग्रंथ को आरम्भ करते है। सर्व प्रथम अध्यात्मयात्रा का पूरा स्वरूप दर्शाने के लिए एक शिष्य की परिकल्पना करते हैं। इसके माध्यम से अध्यात्मयात्रा का श्री गणेश कैसे होता है तथा उसके लिए अधिकारी साधक कैसा होता है, उसकी मनोस्थिति किस प्रकार की होती है, यह दर्शाते हैं।

तापत्रयार्क सन्तप्तः.... - कोई ऐसा साधक जो संसार के त्रिविध ताप से सन्तप्त है। यह त्रिविध ताप का सन्ताप सूर्य की प्रचण्ड गर्मी की पीड़ा जैसा ज्ञात होता है। यह त्रिविध ताप है, आधि भौतिक, आधि दैविक और आध्यात्मिक। आधि भौतिक अर्थात् ज्ञात स्रोत से प्राप्त होने वाली प्रतिकुलता। जिसे जानते हुए भी उस पर अपना नियन्त्रण नहीं होता है। दूसरा आधि दैविक ताप अर्थात् देवताओं की ओर से प्राप्त होनेवाला सन्ताप। देवता से अभिप्राय है, अन्जान स्रोत से। यथा किसी प्राकृतिक आपदा का आन्धी, तूफान, अतिवृष्टि, भूकम्प आदि होना। इस

पर भी अपना नियन्त्रण नहीं होता। और तीसरा आध्यात्मिक। जो आत्मा सम्बन्धी अर्थात् अपने ही शरीर में रोग, पीडा आदि, मन के विकार, बुद्धि के अभिमान आदि रूप दोष, छोटापन, अधूरापन आदि से हम सतत पीडित होते रहते है।

यद्यपि इस जगत में जो भी देहधारी जीव है, उसे भी समान रूप से यह ताप सन्तप्त करता ही है। अधिकतर मनुष्य उसे स्वाभाविक जानकर उसका बाहर उपाय खोजता है। और कुछ न कुछ बाहरी अनुकूलता उत्पन्न करके क्षणिक रूप से उसका शमन करता हैं। यदि नहीं कर पाता है तो देवता आदि की शरण लेकर उनसे अनुकूलता की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता है। किन्तु उन सब के उपाय खोजता तो बाहर से ही है। उसके लिए किसी कर्म का आश्रय लेकर चेष्टा करता है। परिणाम स्वरूप तत्काल रूप से तो उसका निदान प्राप्त भी कर लेता है किन्तु

उसमें मूलभूत कोई परिवर्तन नहीं हो पाता है। क्योंकि जिन चीजों का आश्रय लेता है, वह स्वतः अस्थायी व नश्वर जगत के अन्तर्गत की ही वस्तु होती है। जो स्वतः सीमित होने से क्षणिक समाधान के उपरान्त समस्या ज्यों कि त्यों बनी रहती है। समस्या का स्वरूप समझने के लिए मन शान्त और अन्तर्मुख होना चाहिए। जो व्यक्ति सतत अविचारपूर्वक प्रतिक्रिया करता है, वह विचार हेतु उपलब्ध नहीं हो पाता है।

अतः आचार्य यहां इस शिष्य की मनोस्थिति को दर्शाते हुए बताते हैं कि कश्चिद् उद्विग्नमानसः... शमादिसाधनैर्युक्तः। यद्यपि उसका मन उद्विग्न है, क्योंकि वह अपने जीवन की इस मूलभूत समस्या के प्रति सजग है, उसे बन्धन का अनुभव हो रहा है और यहां उसे संसार से छूटकारे का कोई उपाय नहीं समझ में आ रहा है। किन्तु साथ ही मन शमादि साधन सम्पत्ति से युक्त है।

शमादिसाधनों से अभिप्राय है – शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा समाधान आदि षट् सम्पत्ति। जगत को तटस्थता से देखने के सामर्थ्य की वजह से उसके प्रति

अनित्यता, नश्वरता के संज्ञान से युक्त, रागादि से रहित है। जगत के विषयों के प्रति सुखादिदायक होने का भ्रम से मुक्त है, अतः मन विषयों से विमुख, शान्त है। विषयभोग की असारता का निश्चय होने से इन्द्रियों में लोलुपता का अभाव है। अपनी ओर अभिमुख होकर अपनी समस्या के प्रति सजग है। अपनी और से जो भी संसारी उपायों का आश्रय लिया, उसकी सीमा दीखाई दिया है। अपने वर्तमान ज्ञान आदि में कहीं कुछ दोष है यह निश्चय हुआ है अतः अपने अज्ञान की विनम्र स्वीकृति के साथ प्रामाणिक ज्ञान का आश्रय लेना चाहता है। उसके लिए किसी सद्गुरु अर्थात् जिसने सत्य का ज्ञान प्राप्त किया है और अपनी समस्याओं से मुक्त हुआ है, ऐसे गुरु के प्रति श्रद्धा से युक्त होकर उनकी शरण में जाता है।

परिपृच्छति – अध्यात्म ज्ञान हेतु गुरु के श्री चरणों में विधिवत् उपसदन दीखाता है। अध्यात्मज्ञान के लिए गुरु के प्रति पूर्ण शरणागति आपेक्षित है। जहां अपने अज्ञान की स्वीकृति भी है और ज्ञानवान गुरु के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा है कि वहां से उसे निश्चित रूप से समाधान प्राप्त होगा। उनके पास जाकर वह अपने प्रश्न को उनके समक्ष रखता है

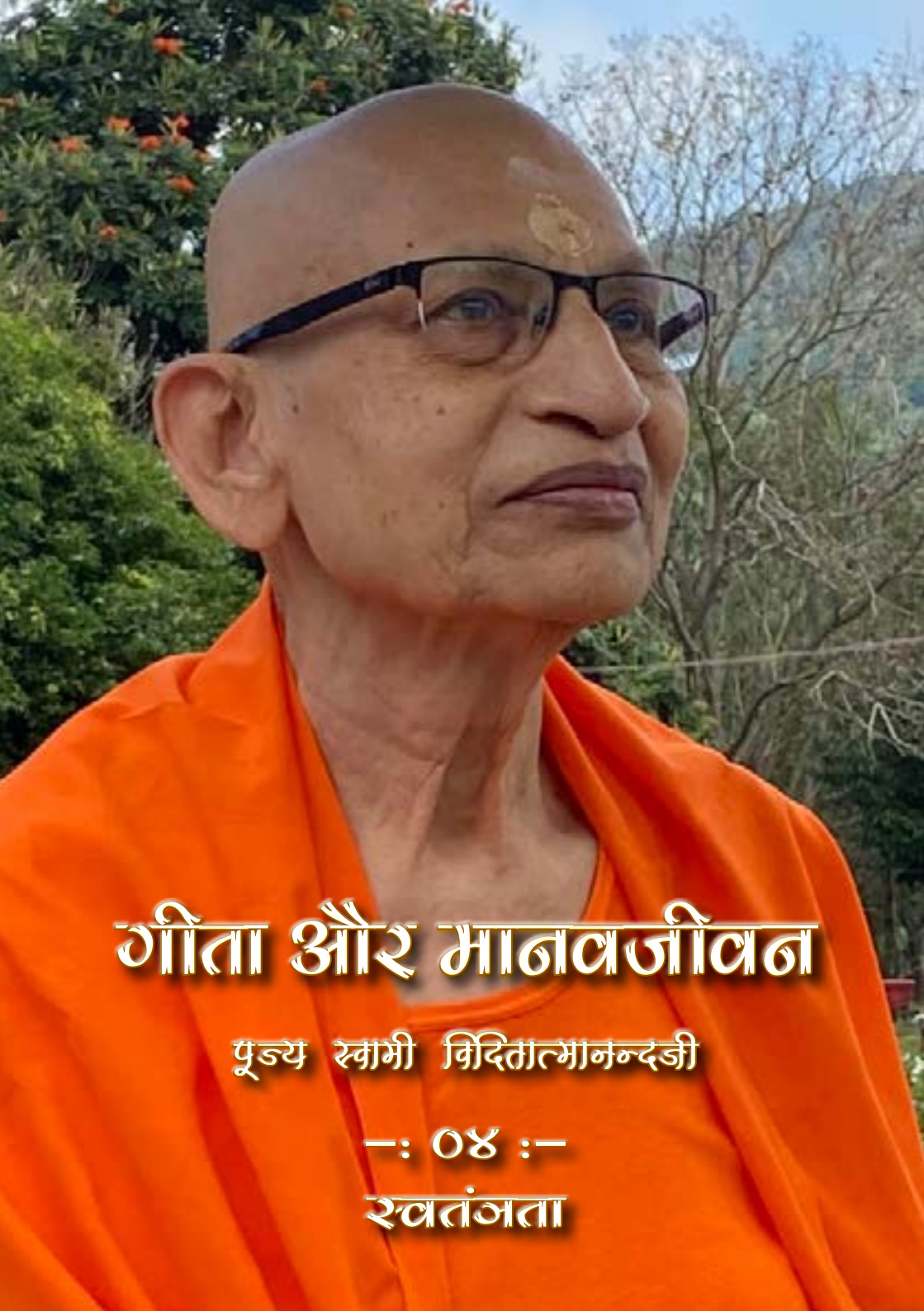

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

—: ०४ :—

स्वतंत्रता

गीता और मानवजीवन

भगवान ने मनुष्य को स्वतंत्रता प्रदान की हैं जिसे अंग्रेजी में free will कहते हैं। जहां सवतंत्रता हो, किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त हुआ हो, वहां उसका दुरुपयोग होने की पूर्णतः सम्भावना होती ही है। यदि ऐसी घोषणा की जाए कि आमदनी के टेक्स देने के कोई नियम नहीं रखे जाएंगे, तुम स्वयं ही गिनती करके टेक्स दे देना, सरकार किसी प्रकार की जांच नहीं करेगी, तो कितने लोग टेक्स देगे? परिणाम उस कथा के जैसा होगा। एक बार किसी विषय पर चर्चा करते हुए बीरबल ने अकबर से कहा कि, जहांपनाह, लोग कितने इमानदार है–उसकी आपको परीक्षा करनी हो तो सब को आदेश दीजीएं कि सुबह तक में सब लोग एक–एक लोटा दूध इस कुण्ड में डाल दें'। अकबर बादशाह ने ऐसा हुक्म सब को दिया। दूसरे दिन देखा कि कुण्ड में पानी ही पानी था। क्यों कि हर व्यक्ति यह सोचता था कि दूसरा व्यक्ति दूध डालेगा ही, उसमें यदि हम एकाद लोटा पानी डाल भी दे तो

गीता और मानवजीवन

कहां पता लगनेवाला है? परिणामस्वरूप एक भी मनुष्य ऐसा नहीं नीकला जिसने उसमें दूध डाला हो! यदि स्वतंत्रता दी जाए तो मनुष्य उसका पूरा लाभ या गेरलाभ लिए बगैर नहीं रहेगा। मनुष्य स्वार्थी है, असन्तुष्ट है और इसलिए स्वतंत्रता का दुरुपयोग की पूरी सम्भावना है।

मनुष्य के अलावा अन्य किसी प्राणियों के लिए ऐसी सम्भावना नहीं है। किसी को भी ऐसी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। जिस प्रकार चाबी वाला खिलौना हो, उसे नीचे रख दे तो वह अमूक प्रकार से ही चलेगा। अन्य तरीके से चलने की उसकी स्वतंत्रता नहीं है। उसी तरह अन्य प्राणी भी चाबी वाले खिलौने जैसे है। इसलिए उन्हें अपने धर्म या स्वभाव से विरुद्ध आचरण की स्वतंत्रता नहीं है। गाय-भैंस, उंट-बैल, चूहा-कुत्ता बगैरह प्राणी अपनी जिम्मेदारी से मुक्त है। उंट को किसी प्रकार के उपदेश देने की आवश्यकता नहीं है। उसे किसी नीति-नियमों की आवश्यकता नही है। अपने धर्म का पालन करने का उसे स्वाभाविक ज्ञान होता है। गाय के मालिक को यह बताना पड़ सकता है कि 'तुम गाय को मत खाना' परन्तु गाय को यह कहने की

गीता और मानवजीवन

आवश्यकता नहीं पडती, क्योंकि वह अपने धर्म को जानती है। अपना क्या धर्म है, उसका ज्ञान लेकर ही वह जन्मी है। मनुष्येतर सर्व प्राणी स्वभाव से ही अपने अपने धर्म का पालन करते रहते है। अतः उसे उपदेश की आवश्यकता नहीं है।

एक मनुष्य ही ऐसा है कि वह अपने धर्म का पालन स्वाभाविक रूप से न भी करें इसीलिए उसे उपदेश की आवश्यकता रहती है। भगवान ने मानवी को स्वतंत्रता प्रदान की हैं, बुद्धि दी हैं। अतः वह अपनी बुद्धि का या अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर सकता है। वह चाहे तो पूरे जगत का कल्याण कर सकता है और चाहे तो पूरे जगत का विनाश भी। बुद्धि दुधारी तलवार जैसी है। जगत में सब वस्तु ऐसी ही है। उसका सदुपयोग करो तो श्रेष्ठ परिणाम मिलता है और दुरुपयोग करने से विनाश का कारण भी बन सकता है। इसीलिए मनुष्य को आदेश की, उपदेश की, मार्गदर्शन की जरुरत है। जो समझता हो उसे आदेश की आवश्यकता नहीं है। किन्तु जो

गीता और मानवजीवन

समझता नहीं है, उसे ऐसा करो, वैस मत करो' इस प्रकार विधि-निषेध का आदेश देना पड़ता है। इसे धर्म का आदेश कहा जाता है। भगवद्गीता में और अन्यत्र 'कर्म' शब्द का प्रयोग होता है तो उसका अभिप्राय है धर्म। धर्म के अनुरूप जो कर्म होता है, वही 'कर्म' कहलाता है।

इस प्रकार मनुष्य मात्र का मूलभूत धर्म एक ही है, तो फिर विविध धर्म क्यों है? हिन्दु, मुस्लिम धर्म, ख्रिस्त धर्म, बौद्ध धर्म - ये सब क्या है? यह विविध सम्प्रदाय है। वह मूलभूत धर्म का पालन करने की विविध पद्धतियां है। इन विविध जीवनपद्धत्ति द्वारा जो सिद्ध करने की अपेक्षा है, वही मनुष्य का मूलभूत धर्म है। भिन्न-भिन्न आचार्य और धर्मगुरुओं ने अपनी-अपनी दृष्टि के अनुरूप, तत्तद् समय में, उन-उन लोकों को, और उन-उन देश में स्थान, समय और परिस्थिति के अनुरूप उपदेश दिए हो सकते है। यह सम्प्रदाय उस मूलभूत धर्म का जीवन में विनियोग है, और यह विनियोग स्थान-स्थान व समय-समय में सदैव बदलता रहेगा। इसलिए सभी सम्प्रदायों को इतना श्रेय प्रदान करें कि सब का मूल प्रयोजन एक ही है कि मनुष्य अपना मूलभूत धर्म सिद्ध कर सकें।

जीवनमुक्त

– ३८ –

जम्नोत्री

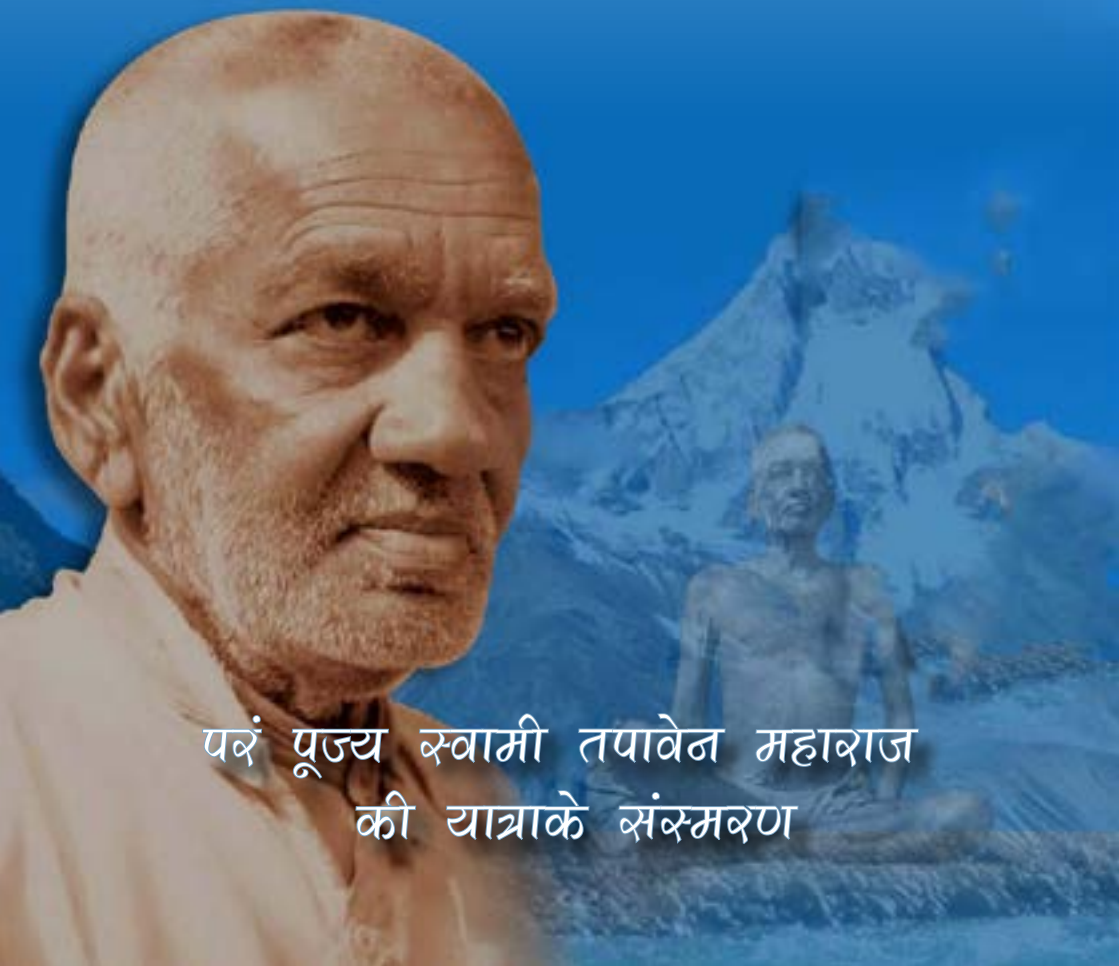

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवनमुक्त

जमुना नदी का उत्पत्ति-स्थान जम्नोत्रि कहलाता है, जो कि हृषीकेश से लगभग एक सौ बीस मील पश्चिमोत्तर दिशा में स्थित है। 'वानरपुच्छ' नामक सुप्रसिद्ध शिखर के नीचे उष्णजल - गंधकजल से पूर्ण कुण्डों के युक्त हिमालय के इस रमणीय तथा पवित्र तीर्थधाम में भी कई पुण्यात्मा यात्री यात्रा करते है। यह देखिए, यहां कलिंद शैल से निकल कर एक छोटी जलधारा के रुप में इन्द्रनील के समान नीलिमा से भरी कलिंदजा बह रही है।

उत्तरकाशी से एक बार मैंने इस पुण्यधाम की ओर यात्रा की थी। करीब पैंतालीस मील पर स्थित इस स्थान पर उत्तरकाशी से ही तीन चार दिनों में पहुंच सकते है। जम्नोत्रि का मार्ग हिमालय के दूसरे मार्ग के ही समान अति प्रकृति सुन्दर तथा हृदयाह्लादक है। इसके सौंदर्य के सम्बन्ध में केवल इतना कह सकता हूं कि नन्दनवन के बीच यदि कोई मार्ग हो तो वही इस हिमालय मार्ग का उपमान बन सकता है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री मनु और दशरथ चरित्र

— ०७ —

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना।
ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।।

मनु और दशरथ चरित्र

महाराज श्री दशरथ के सौभाग्य की सभी लोग सराहना करते हैं। उनका सौभाग्य निरन्तर बढ़ता ही गया। श्रीराम के प्रति उनकी आसक्ति-स्नेह की कोई सीमा न थी। उनसे कुछ क्षणों के लिए अलग होने की कल्पना भी उन्हें असह्य थी। औदार्य से भरे हुए होने पर भी वे ऐसे अवसरों पर अनुदार हो जाते हैं। इसका प्रमाण तब प्राप्त हुआ कि जब महर्षि विश्वामित्र यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण की याचना करने के लिए अयोध्या में पधारें। जब तक उन्हें ब्रह्मर्षि की याचना का स्वरूप ज्ञात नहीं था तब तक उनके उत्साह की कोई सीमा न थी। किन्तु रामभद्र की मांग होते ही वे व्याकुल हो जाते हैं और अपने ही वचनों को भुलाकर स्पष्ट शब्दों में अस्वीकृति के वाक्य बोल पड़ते हैं।

किन्तु गुरु वशिष्ठ के प्रति उनकी सुदृढ़ निष्ठा उन्हें वचन भंग के दोष से मुक्त कराने में सफल होती है। ममत्व से विचलित होने पर भी वे धर्म के प्रति अपनी अडिग निष्ठा के कारण राघव और लक्ष्मण को बिना किसी परिकर के महर्षि के साथ भेजने के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं।

इस प्रसंग की परिणति अन्त में चारों राजकुमारों के विवाह के रूप में होती है। उनका सौभाग्यसूर्य मध्याह्न में पहुंच जाता है। जनकपुर की पत्रिका मिलने पर गुरु वशिष्ठ द्वारा भावभीने स्वर में उनकी धर्मशीलता की सराहना उनके चरम सौभाग्य की ही अभिव्यक्ति थी। किन्तु उनका यह सौभाग्य शाश्वत सिद्ध नहीं हुआ। राम वनगमन के रूप में उन्हें जिस विपत्ति का सामना करना पड़ा वह अन्त में उनका प्राण लेकर ही छोड़ती है। महाराज श्री ने राज्य का उत्तराधिकार के प्रश्न को कुछ इस तरह उलझा दिया कि उसने अनेकों समस्याओं को जन्म दे दिया। मानस में यद्यपि इसका कोई प्रत्यक्ष प्रमाण प्राप्त नहीं होता कि उन्होंने कैकेयी को विवाह करते समय किसी प्रकार का वचन दिया था। किन्तु घटनाएं जिस रूप में घटित हुई उससे

मनु और दशरथ चरित्र

यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे किसी-न-किसी आशंका से प्रेरित अवश्य थे। युवराज पद पर रामभद्र को अभिषिक्त करने के लिए वे अत्यन्त उतावले दिखाई देते हैं। अभिषेक का मुहूर्त निश्चित हो जाने पर भी वे भरत को ननिहाल से बुलाने का कोई प्रयास नहीं करते। भरत के प्रति उनका प्रगाढ़ विश्वास था, किन्तु ननिहाल की ओर से वे निश्चिन्त प्रतीत नहीं होते। भरत के बुलाए न जाने की घटना को माध्यम बनाकर ही मन्थरा अपने षड़यन्त्र में सफल हो जाती है। कैकेयी के लिए राघवेन्द्र को अभिषिक्त करना सुखद समाचार था किन्तु इस तर्क का उनके पास कोई उत्तर न था कि भरत को ऐसे सुअवसर से वंचित क्यों किया गया? इसमें उन्हें षड़यन्त्र की गन्ध आना अस्वाभाविक नहीं था।

पौराणिक गाथा

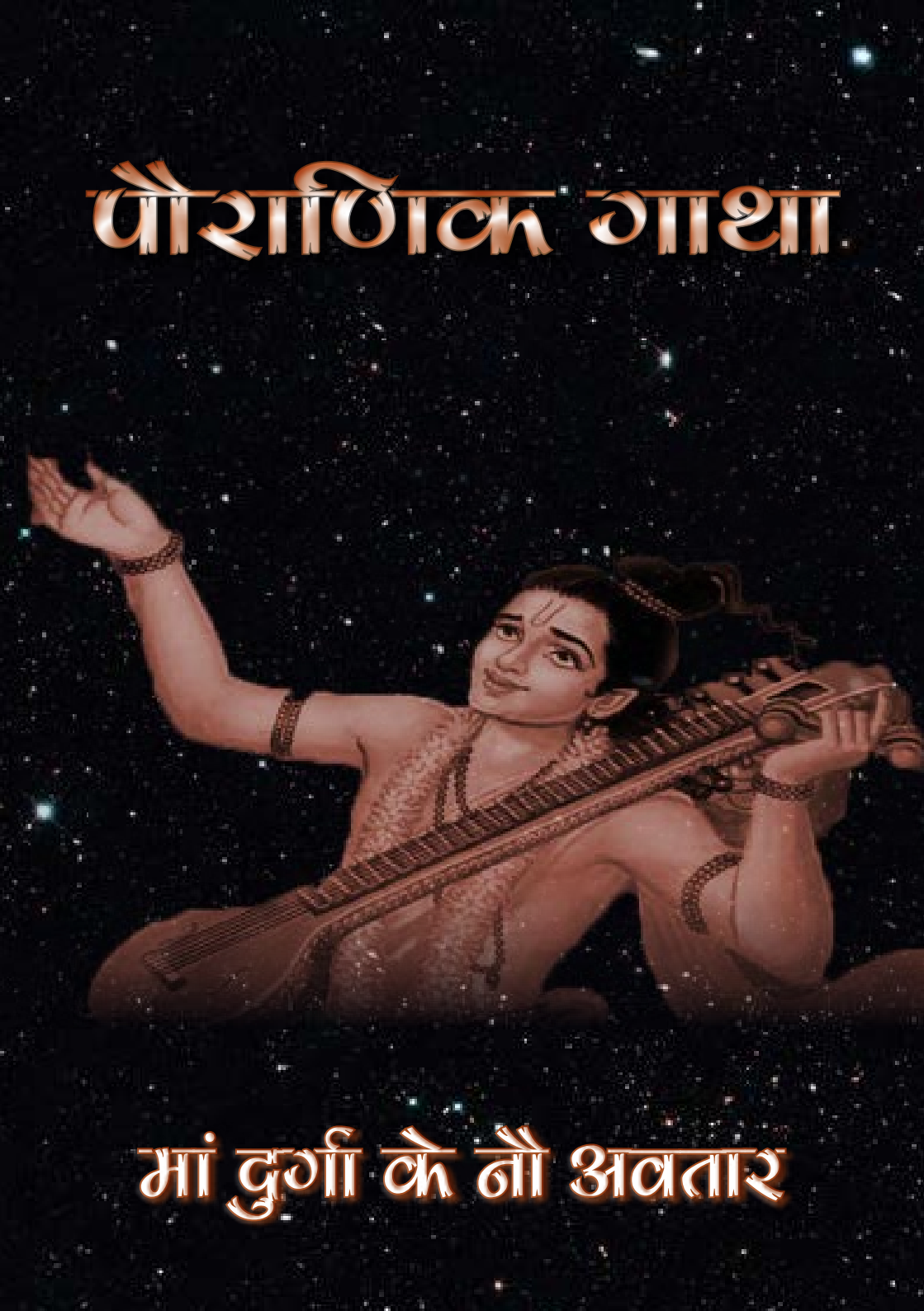

मां दुर्गा के नौ अवतार

मां दुर्गा के नौ अवतार

१. शैलपुत्रीः शैलपुत्री देवी दुर्गा का प्रथम रूप है। वह पर्वतों के राजा हिमालय की पुत्री हैं। राजा हिमवान् और उनकी पत्नी मैनका ने कई तपस्या की, जिसके फलस्वरूप माता दुर्गा उनकी पुत्री के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुईं। तभी उनका नाम शैलपुत्री अर्थात् पर्वतपुत्री रखा गया। माता शैलपुत्री का वाहन बैल है तथा उनके दायें हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमलपुष्प होता है।

दक्षयज्ञ में मां ने सती के रूप में अपने शरीर को त्याग दिया। उसके पश्चात् वे पुनः महादेव की अर्धांगी बनी।

२. ब्रह्मचारिणी : ब्रह्म अर्थात् जो परमात्मा में सदैव विचरण करती हैं। माता दुर्गा के इस रूप में वह अपने दाएं हाथ में एक जपमाला पकड़ी रहती है और बाएं हाथ में कमण्डलु। नारद मुनि की सलाह देने पर माता ब्रह्मचारिणी ने शिवजी को पाने के लिए कठोर तपस्या करते हुए उन्हींमें सतत रमती रही।

मां दुर्गा के नौ अवतार

मुक्ति प्राप्ति के लिए माता शक्ति ने ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया और उसी कारण से उनको ब्रह्मचारिणी नाम से पूजा जाता हैं। उनका यह रूप सदैव अपने भक्तों को सर्वोच्च पवित्र ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है।

३. चन्द्रघण्टाः यह माता दुर्गा का तीसरा रूप है। चन्द्रमां के समान यह रूप परं शान्ति और शीतलता प्रदान करने वाला है। यह रूप तेजस्वी स्वर्ण की कान्ति से युक्त है और उनका वाहन सिंह है। उनके दस हाथ है और कई प्रकार के अस्त्र-शस्त्र जैसे खड़ग, त्रिशूल, पद्मपुष्प आदि उनके हाथों में होते हैं।

मां चन्द्रघण्टा की पूजा-आराधना करने से पाप और मुसीबतें दूर होती है।

४. कुष्माण्डाः यह माता दुर्गा का चौथा रूप है। जब पृथ्वी पर कुछ नहीं था और हर जगह अन्धकार ही अन्धकार था तब माता कुष्माण्डा ने सृष्टि को जन्म दिया। उस समय माता सूर्यलोक में वास करती थी। उर्जा का सृजन भी उन्हींने सृष्टि में किया।

मां दुर्गा के नौ अवतार

माता कुष्माण्डा के आठ हाथ होते है, इसलिए उन्हें अष्टभुजा देवी के नाम से भी जाना जाता है। उनका वाहन सिंह है और माता के हाथों में कमण्डलु, चक्र, कमलपुष्प, अमृतकलश और जपमाला होते हैं। माता कुष्माण्डा शुद्धता की देवी है।

५. स्कन्दमाताः यह माता दुर्गा का पांचवा रूप है। मां दुर्गा ने देवताओं को आशीर्वाद देने के लिए महादेवजी से विवाह किया। असुरों और देवताओं के युद्ध के दौरान तथा तारकासुर का वध करनेके लिए देवताओंको एक मार्गदर्शक नेता व कुशल योद्धा की आवश्यकता थी। शिव-पार्वती के माध्यम से पुत्र कार्तिकेय प्राप्त हुआ, जिन्हें स्कन्द भी कहा जाता है।

इस रूप में सिंह पर सवार हुई माता स्कन्द को अपने गोद में धारण किए हैं, अतः स्कन्दमाता के नाम से पूजी जाती हैं। उनकी चार भुजाएं हैं, उपर के हाथ में कमलपुष्प, नीचे का चिन्मुद्रायुक्त तथा अन्य हाथ से कार्तिकेय को पकडे हुए हैं।

६. कात्यायनीः यह दुर्गा माता का छठ्ठा रूप है। महर्षि कात्यायन एक महान ज्ञानी थे। वे जगत्कल्याण हेतु महिषासुर का अन्त करने के लिए कठोर तपस्या कर रहे थे। एक दिन ब्रह्मदेव,

मां दुर्गा के नौ अवतार

विष्णु और महेश एक साथ उनके समक्ष प्रकट हुएं और त्रिदेव ने मिलकर अपनी शक्ति से माता दुर्गा को आश्विन मास के १४वें दिन पूर्ण रात्रि के समय प्रकट किया। महर्षि कात्यायन प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने माता दुर्गा की पूजा की थी, इसलिए माता दुगा का नाम कात्यायनी हुआ। आश्विन मास के शुक्तपक्ष की सप्तमी, अष्टमी और नौंवी के दिन नवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है और दसवें दिन महिषासुर का अन्त मनाया जाता है।

मां कात्यायनी के चार हाथ है, जिसमें दाहिना हाथ चिन्मुद्रायुक्त है जो अभयत्व देता है। नीचले हाथ में आशीर्वाद की मुद्रा, बाएं उपरी हाथ में तलवार और नीचले हाथ में कमलपुष्प है।

७. कालरात्रिः मां कालरात्रि दुर्गा का सातवां रूप हैं। वे काल की भी विनाशक होने से उनका नाम कालरात्रि है। उनका रंग काला और बाल बिखरे व उड़ते हुए है। उनका शरीर अग्नि के समान तेजोमय है। एक हाथ में गदा, दूसरा हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में, तीसरा अभयत्व प्रदान करता हुआ और अन्य हाथ में गदा और लोहे की कटार है। उनका प्रचण्ड व बहुत भयानक रूप है। असुरों व अधर्मगामी के मन में भय पैदा करती है अतः भयंकरि भी है।

मां दुर्गा के नौ अवतार

८. महागौरीः यह मां दुर्गा का आठवां रूप है। देवी पार्वती का रंग सांवला था और इसी कारण महादेव उन्हें कालिका के नाम से पुकारा करते थे। बाद में माता पार्वती को गंगामैया ने अपना जल छिड़कर गौरवर्ण प्रदान किया। इसलिए वे महागौरी कहलाई।

उनका वाहन बैल, उपरि दाहिने हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में, नीचला हाथ त्रिशूल धारण किए, बाएं हाथ में डमरू और नीचला हाथ वरदान और आशीर्वाद देने की मुद्रा में है। उनकी आराधना भ्रम से मुक्ति दिलानेवाली है।

९. सिद्धिदात्रीः यह नौवां रूप है। वे समस्त प्रकार की सिद्धि प्रदान करनेवाली है। माता सिद्धिदात्री की अनुकम्पा से ही शिवजी को अर्धनारीश्वर रूप मिला था। उनका वाहन सिंह है और उनका आसन कमल है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी शिविर / गीता अध्याय - ४

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी शिविर / गीता अध्याय - ४

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी शिविर / संस्कृत एवं श्लोकपाठ

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी शिविर / प्रतिदिन अभिषेक

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी शिविर / भोजन / प्रसाद ग्रहण

आश्रम / मिशन समाचार

ज्ञानवैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी शिविर / सम्भवामि युगे युगे

आश्रम / मिशन समाचार

शिविर समापन

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी शिविर समापन पूजा

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

ऑनलाईन गीता ज्ञानयज्ञ

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी उत्सव

आश्रम / मिशन समाचार

जन्माष्टमी उत्सव

आश्रम / मिशन समाचार

विष्णु सहस्रनाम अर्चना

आश्रम / मिशन समाचार

विष्णु सहस्रनाम अर्चना

आश्रम / मिशन समाचार

विष्णु सहस्रनाम अर्चना

आश्रम / मिशन समाचार

ओम् श्री विष्णवे नमः

आश्रम / मिशन समाचार

भए प्रकट कृपाला दीन दयाला

आश्रम / मिशन समाचार

नन्द घेर आनन्द भयो

आश्रम / मिशन समाचार

श्री गंगेश्वर महादेव पूजन

आश्रम / मिशन समाचार

श्री गंगेश्वर महादेव पूजन

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता
(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 8.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

श्रीमद् भगवद् गीता
साप्ताहिक कक्षाएं / प्रति शनिवार

प्रति शनिवार सायं 5.00 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

गीता ज्ञान यज्ञ

अध्याय - 15 / पुरुषोत्तम योग

दि. 29/10 से 4/11/2023; सायं 6 बजे से

दत्त मन्दिर, जलगांव

पूज्य स्वामिनी पूर्णानन्दजी

गीता ज्ञान यज्ञ

अध्याय - 1 / अर्जुन विषाद योग

दि. 16 से 21 दिसम्बर 2023; सायं 6 बजे से

रामकृष्ण केन्द्र, अहमदाबाद

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Audio / Video Pravachans on YouTube Channel

~ Gita Ch. 04 (Camp)

~ Gita Ch. 18 (OIGGY)

~ Tattvabodha (VA Camp)

~ Gita Ch. 06 (MIT)

~ Gita Ch. 12

~ Gita Ch. 17

~ Sadhna Panchakam

~ Drig-Drushya Vivek

~ Upadesh Saar

~ Atma Bodha Pravachan

~ Sundar Kand Pravachan

~ Ekshloki Pravachan

~ Sampoorna Gita Pravachan

~ Kathopanishad Pravachan

~ Shiva Mahimna Pravachan

~ Hanuman Chalisa

~ Laghu Vakya Vrittu (Guj)

~ Gita Ch. 5 (Guj)

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Oct '23

Vedanta Piyush - Sep '23

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Published by:
Vedanta Ashram, Indore

Editor:
Swamini Amitananda Saraswati